दलितों के उत्थान में अम्बेडकर की भूमिका

प्रियंका सिंह

डॉ0 भीमराव ने दलितों के उत्थान तथा न्याय के लिए उन्होंने अपने को कष्ट में रखकर अछूतों की भलाई की। आर्थिक स्थिति सही न होने के कारण भी उन्होनें भागीरथ प्रयास किया। शोषितों को न्याय मिले इसके लिए उन्हेंाने जुलाई 1928 में डिप्रेस्ड क्लासिस शिक्षा सोसाईटी की स्थापना की, जिससे समाज के सभी लोगों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल सके। लोग शिक्षित होंगे तभी देश का भला होगा। मुम्बई सरकार से पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों के लिए उन्होंने दो छात्रावास स्थापित करा दिये थे। उनकी माँग पर मुम्बई प्रान्त के गवर्नर ने 8 अक्टूबर, सन् 1928 को दलित वर्ग के छात्रों हेतु पाँच छात्रावासों की स्थापना करवाई। ये सभी कार्य अम्बेडकर के परिश्रम का परिणाम था।

अछूतों को मन्दिर में प्रवेश दिया जाय कि नहीं, इस प्रकरण पर गांधी जी भी सहमत नहीं थे। ये इस पक्ष में भी नहीं थे कि एक साथ भोजन किया जाये। गांधी जी का कहना था कि–''यदि पुराने मन्दिर में अछूतों को प्रवेश करने से मना करते हैं, तो तुम उनके लिये मन्दिर बनवा सकते हो। वह वहाँ अपनी पूजा–अर्चना कर सकते हैं, वह मन्दिर अछूतों का ही होगा।'' उनकी दृष्टि में मन्दिर में प्रवेश के लिये आन्दोलन चलाना अच्छा है, परन्तु उससे भी जरूरी अन्य समस्याओं पर ध्यान देना है।